गुरु नानक – सबद ५०
गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १७

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥
गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥
मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥
बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥
जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥
पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥९॥

सार: जो लोग ज्ञान और आत्मबोध की तलाश करते हैं, वह अज्ञानता से जागरूकता की ओर एक परिवर्तनकारी यात्रा पर निकलते हैं। इस खोज में, वह उस गहन सत्य को खोजते हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि को घेरे हुए असीम और सर्वव्यापी ऊर्जा के रूप में प्रकट होता है।ऐसे गुणवान लोग अच्छाई और प्रेरणा के प्रकाशस्तंभ बनते हैं। इसके विपरीत, जो लोग सद्गुणों के मार्ग से भटक जाते हैं, वह अक्सर पछतावे से जूझते हैं, उन विकल्पों पर विचार करते हैं जो उन्हें महानता और उनकी वास्तविक क्षमता प्राप्त करने से रोकते हैं।

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
गुणवान लोग अच्छाई फैलाते हैं जबकि जो सद्गुणों से भटक जाते हैं, वह पछतावे में डूब जाते हैं।

जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥
जो साधक दिव्यता की खोज करता है, वह इसे धोखे के माध्यम से नहीं पा सकता।

ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥
न कोई नाव और न ही कोई बेड़ा है जो आपको उस साथी तक ले जा सके जो दूर है। यह इस बात का प्रतीक है कि मात्र आध्यात्मिकता का ज्ञान आपको दिव्यता से नहीं जोड़ सकता। (१)

मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥
मेरा मालिक, जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, प्रकृति में सर्वव्यापी शक्ति के रूप में विद्यमान है।

गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥
जो लोग ज्ञान का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए अज्ञानता से जागरूकता की ओर बढ़ते हैं, वह अथाह सर्वव्यापी ऊर्जा के सत्य को प्राप्त करते है। (१)(विराम)

प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥
सर्वव्यापी एकता का स्थान रत्नों और माणिकों से सुसज्जित, आनंद बिखेरता है। यह प्रतीक है कि सर्वव्यापी एकता अमूल्य है।

मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥
साफ़ मोती और हीरों से सुशोभित, यह सुनहरा क़िला मधुर अमृत से भरा है। यह इस बात का प्रतीक है कि जब मन में शुद्ध विचार होते हैं तब जीवन का सच्चा आनंद मिलता है।

बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥

बिना सीढ़ी के कोई क़िले तक कैसे पहुँच सकता है? इसी तरह से जब हम सर्वव्यापी एकता और ज्ञान को अपनाते हैं तब सच्चा उत्थान संभव होता है। (२)

गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥
सहज विवेक एक तालाब की शांति और समुद्र की विशालता को दर्शाता है, जो आत्मा को जीवन की अज्ञात चुनौतियों को नाव के रूप में पार करने में सक्षम करने काम करता है। यह तीर्थ स्थलों पर पवित्र नदियों की तरह बहता है और साधकों को उनके आख़िरी लक्ष्य तक पहुँचने में मार्गदर्शन करता है।

गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥
यदि लाभ का विचार प्रतिध्वनित होता है, तो सहज विवेक के कुंड में स्नान करके उज्ज्वल और शुद्ध बनें।

जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥
आत्म-चिंतन से प्राप्त विवेक जीवन के तूफानों में एक बेड़े की तरह काम करता है, जो अशांत समय में तैरते रहने में मदद देता है। (३)

पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥
पूर्णता तभी संपूर्ण मानी जा सकती है जब यह शरीर के भीतर एक सिंहासन के रूप में निवास करे।

पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥
पूर्णता का स्थान आकर्षक होता है जहाँ आशाएँ और निराशाएँ सह-अस्तित्व में रहती हैं और उन्हें संपूर्णता में गले लगाया जाता है।

नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥९॥
नानक कहते हैं कि जब व्यक्ति को पूर्ण विवेक प्राप्त हो जाता है तब उसके भीतर निहित सद्गुण अडिग और स्थायी हो जाते हैं। (४)(९)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति वास्तव में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है तब उसके भीतर के जन्मजात गुण स्थिर और अडिग हो जाते हैं। सहज विवेक की यह अवस्था एक संतुलित वातावरण को बढ़ावा देती है, जिसे अक्सर एक संपूर्ण और आदर्श जगह के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस स्थान पर आशा और निराशा दोनों का समावेश होता है, जो एक नाज़ुक संतुलन में आपस में जुड़े हुए हैं। इन दोनों पहलुओं को स्वीकार करने से जीवन की जटिलताओं का समृद्ध अनुभव प्राप्त होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com